

उधो मन न भए दस बीस

उधो, मन न भए दस बीस।

एक हुतो सो गयौ स्याम संग, को अवराधै ईस॥

सिथिल भई सबहीं माधौ बिनु जथा देह बिनु सीस।

स्वासा अटकिरही आसा लागि, जीवहिं कोटि बरीस॥

तुम तौ सखा स्यामसुन्दर के, सकल जोग के ईस।

सूरदास, रसिकन की बतियां पुरवौ मन जगदीस॥

<https://www.bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/27817/title/udho-man-na-bhaye-dus-bees>

अपने Android मोबाइल पर [BhajanGanga](#) App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |